आरहवीं इन्टर
मैथिली (100)

प्रो० संजीत कुमार राम
मैथिली विभाग
अतिथि शिक्षक
V.S.J. College Rajnagar

सीमान्तिनी कथाक समीक्षा

सीमान्तिनी कथा परमेश्वर झाक रचना अछि। सीमान्तिनी ई एकटा नारीक कथा अछि। एहिमे सीमान्तिनी राजाक चित्रवर्मा बेटीक नाम अछि। जन्मसँ लऽ विवाह सँ पूर्व धरि एहिमे कथा कहल गेल अछि। भारतवर्षमे चित्रवर्मा नामक राजा छलाह। हुनका विभिन्न गुण सँ मण्डित कतेको पत्नी छलथि। सब पत्नी सँ हुनका पुत्र रत्न प्राप्ति छलन्हि, मुदा एकटा कन्या रत्नक इच्छा सेहो छलन्हि। बहुत देवता-पितर सँ आराधना केलाक बाद हुनका एकटा कन्या जन्म लेलन्हि। राजा हुनकर जाति सब कर्मसंस्कार सम्पन्न कराय एगारहमा दिन नामकरण भेलैक आ ओकर नाम सीमन्तिनी राखल गेल।

एक दिन राहि खुशीमे भारी सभा लगाओल गेल। ठाम-ठामसँ अपन-अपन विषयक ज्ञाताकेँ बजाओल गेल। सभहक बीच उपस्थिति भेलाक बाद अपन इच्छा प्रकट कयलनि आ कहलथिन जे ई जे श्रीमतिनी जन्म लेलनि तनिकर कर्म केहन छैन्ह एतबा बजिताहि एकटा परम वृद्ध ज्योतिष राजाक गुणगान करैत हुनक प्रशंसाक बखान करैत ओकर कुण्डली मिलान करैत बाजि उठलाह - " अति दीर्घायु आ भाग्यवती होयतीह। तथा गौरीक सन सौभाग्यशाली, दमयन्तीक सनि स्वरूपा, सरस्वतीक सनि कला-भिज्ञा, लक्ष्मीक सनि सर्वाङ्गिकलापूरिका, अदि-तिक सनि सुप्रजा, सीताक सनि पतिव्रता, चन्द्रिका सनि लोचन सुखदायिनी होइतीह तथा अत्युत्तम राजकुलमे विवाह सम्बन्ध भेलापर बहुत दिन पर्यन्त पतिक सँग भोग-विलास कए आठटा पुत्र आओर एक कन्या उत्पन्न करतीह।"

राजा हुनक प्रशंसा सुनि ओ परम वृद्धके अत्यधिक पारितोषित कए

ह प्रसन्न कयलन्हि। लगले बाद मे एकटा
नव ज्योतिष द्वारा ई बात सुनि — "जे
महाराज ! अहाँक सन्तान त छनि परन्तु
एकटा योग एहन लागल छैन्ह जे चौदहम
वर्ष वैधव्य अवश्य होयत।"

ई कठोर शब्द सुनि राजा बहुत चिन्तित
भेलाह। पूरा सभास्थल घोर चिन्ता मे डुबि
गेल। ई खबरि धीरे-धीरे रनिवास धरि
पहुँच गेल। ओतहु सभ व्याकुल भऽ गेल।
चारूभाग कोलाहल मचि गेल, नाना प्रकारक
गप बाजय लागल छल। एहि समयमे एकटा
बूढ़ा दीवान ड्योढ़ी पर अयलाह सभसँ प्रधान
स्वामिनीके बजाय कहलथिन्ह जे हमर स्वामिनी
महारानी लोकनिसँ साष्टांग प्रणाम कहि
निवेदन कहि देबै अहाँक ओहि देखाबि जे
राजाक दरबार मे अनेक तरहक लोक अबैत
अछि अनेक तरहक कथा बजैत अछि।
तकर विश्वास कोन? कदाचित एहने संशय

निक सँ जाहि शास्त्र मे अभिष्ट योग लिखित अछि ताहि शास्त्र मे प्रीति कों स्थापनक विधियो लिखल अछि।

धनाधिनीक मुँह सँ देवानक ई संवाद सुनि राज महारानी लोकनि धैर्य धारण कए ओकरे विपरीत गेलीह। सीमान्तिनी थोड़े दिनमे आठिकड धौ सखियों केला मे निपुण भऽ गेलीह।

Somnath
20/04/20